उपसंहार

पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य ज्ञान विज्ञान के ऐसे शब्दों से हैं जो विषय विशेष की सीमा में परिभाषित किए जा सकते हैं । हर विकसित भाषा में ज्ञान-विज्ञान की प्रत्येक शाखा में अपनी-अपनी पारिभाषिक शब्दावली होती है ।

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली की परंपरा काफी पुरानी है । लेकिन व्यवस्थित रूप से पारिभाषिक शब्दों का निर्माण एवं व्यापक उपयोग स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही शुरू हुआ । स्वतंत्रता पूर्व भारत में अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान एवं प्रशासन के क्षेत्र में हो रहा था । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस दिशा में विशेष कदम उठाए गए । फलस्वरूप आज हिन्दी में परिमार्जित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हो सका । इस दिशा में आज भी अध्ययन-अनुसन्धान ज़ारी है ।

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण एवं विकास में अनेक संस्थाओं एवं व्यक्तियों का योगदान हुआ है । पारिभाषिक शब्दावली निर्माण आयोग, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग जैसी संस्थाओं और डॉ. रघुवीर, डॉ. भोलानाथ तिवारी, श्री हरिबाबु कंसल जैसे विशेषज्ञों के नाम इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं । यह तो सच है कि पारिभाषिकशब्दावली का निर्माण कार्य आज भी सुचारू ढंग से चल रहा है । सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यम जैसे क्षेत्रों में दिन-व-दिन नई परिकल्पनाओं का रूपायन हो रहा है । इसलिए नए-नए पारिभाषिक शब्दों का निर्माण भी आवश्यक हो जाता है ।

पारिभाषिक शब्दावली का मुख्य संबन्ध जन जीवन से है । हर व्यक्ति को किसी न किसी रूप में रोज़ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है । भाषाई उन्नति के लिए भी पारिभाषिक शब्दावली का विकास आवश्यक है । इन शब्दों के प्रचार-प्रसार से ज्ञान-विज्ञान का प्रचार आसान हो जाएगा और आम जनता भी उससे लाभान्वित हो जाएगी ।

अंत में मेरे इस शोध अध्ययन के पश्चात् जो विचार बिन्दुएँ उभर कर आयी हैं, वे इस प्रकार हैं –

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की विशेष नीति पारिभाषिक शब्दावली आयोग ने अपनाई है और उस नीति को आधार बनाकर अब तक विकसित पारिभाषिक शब्दावली स्तरीय मानी जा सकती है । अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के स्थान पर अंग्रेज़ी पदावली को अपनाने की रीति ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न शाखाओं में देखी जा सकती है । संस्कृत के शब्दों के साथ साथ हिन्दी के अपने शब्द और उर्दु, फारसी जैसी अन्य भाषाओं के शब्दों को भी पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ है ।

हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के साथ-साथ अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग भी आजकल चल रहा है । कुछ अंग्रेज़ी शब्द लोकप्रियता की दृष्टि से हिन्दी शब्दों से काफी आगे हैं, अतः एकदम अंग्रेज़ी शब्दों को छोड़ना आसान कार्य नहीं है ।

सूचना प्रौद्योगिकी और जन संचार माध्यम के क्षेत्रों में ज़्यादातर अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का प्रयोग चल रहा है । ये दोनों क्षेत्र किसी देश विशेष तक सीमित भी नहीं है । अतः अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग लिप्यंतरण या लिप्यंकन करके हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली में शामिल की गई है । इन दोनों क्षेत्रों में अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दों के बराबर हिन्दी पारिभाषिक शब्दों का

निर्माण तो अवश्य हुआ है, लेकिन लोकप्रियता की दृष्टि से और अंतर्राष्ट्रीय शब्द होने के कारण उन शब्दों के स्थान पर अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग अधिकतर चल रहा है । हिन्दी हमारी राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है । देश की अस्मिता को बरकरार रखने के लिए हिन्दी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग सार्वत्रिक बनाने का प्रयास चल रहा है । व्यावहारिक दृष्टि से कहीं कहीं छूट देनी पडती है और यह छूट हिन्दी की उपेक्षा के लिए नहीं बल्कि हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए ही अपनाई जाती है ।

संक्षेप में हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास अबतक जो हुआ है वह स्तरीय है और उसके निर्माण के लिए जो नीति अपनाई गई वह तो सही मानी जा सकती है । आज सूचना प्रौद्योगिकी के बढते विकास के कारण फिर से अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ रहा है । अंग्रेज़ी में काम करने के सरल साधन, कंप्यूटर जैसे मशीनों के प्रयोग से हिन्दी जानने वाले कर्मचारी भी अंग्रेज़ी में काम करते हैं । क्योंकि कंप्यूटर में अंग्रेज़ी कार्य करना अधिक सरल एवं सुगम है । इसका आविष्कार अंग्रेज़ी प्रदेशों में हुआ है । फिर भी भाषा वैज्ञानिकों की सहायता से आज एक संगणकीय भाषा के रूप में हिन्दी का विकास हुआ है ।

आज अंग्रेज़ी के बराबर कंप्यूटर संबन्धी सारी भाषापरक सुविधाएँ हिन्दी में भी उपलब्ध है । लेकिन उसके व्यापक प्रचार की आवश्यकता है । उसके साथ ही साथ आम जनता तक हिन्दी के माध्यम से कंप्यूटर में कार्य करने केलिए उचित प्रशिक्षण देना भी आवश्यक है । सरकारी कामकाज में अंग्रेज़ी को ही प्रधानता मिल रही है । यह अंग्रेज़ी मानसिकता के कारण है, अंग्रेज़ी मानसिकता को बदलना की ज़रूरत भी है । संगणकीय भाषा के रूप में हिन्दी का विकास जो हुआ है उसे व्यावहारिक धरातल पर लाना भी चाहिए।